

सहिचरि पठाई (१०६)

साई साहिब जन्म जी शुभ घड़ी आई।
वणनि वलियुनि मां मिली आ वाधाई॥

सुखदेवी अमड़ि जी गोद भरी आ
बाबा रोचल जी दिलड़ी ठरी आ
साकेत नाथ साई पंहिजी सहचरी पठाई॥

रितु बसंत चेट जी पूर्ण मासी लथो लाट तां
साहिबु शुभ गुण राशी
सिंधु जे सौभाग्य लाइ थियो राजी रघुराई॥

चइनी तरफ आ फूली फुलवाड़ी
वसी प्रीतम जो मुखु चंद्र थिया गद् गद् नर नारी
स्वामी आत्माराम सनेह जी चोली पहिराई॥

श्री जयदेव आदि रसिक संत उते आया
बालक संत साई अ ते फूल वर्षाया
जै जै मधुर धुनिड़ी गगन गुंजाई॥
दिव्य चान्दनी छिटकी सभिनी आंगन में
फूली न थी समाये माता मन में
भाग भरी जननी जीय में हर्षाई॥